

DPN 662.1

Title : दशबल तुतः व गुरुमण्डल
DASABALA TUTAH WA GURUMAN ~~D~~ALA

Run. No. 7346

Cat. No.

Micro. No.

Subject तुतः व पूजाविधि Hymn and Ritual ✓
Religion : Hindu / Bauddha

Language : ☒ Skt. / ☒ New. / ☒ Nep. / ☐ Skt.- New. / ☐ Maith.- New. / ☐ New.- Nep. /

Size in cms. 20 x 8

Folios 20

Lines (in a page) 5/6

☒ Compl. / ☒ Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : ☒ New. / ☒ Dev. / ☒ Bhuj. / ☒ Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / ☒ thyaṣaphu /

Condition : fine / ☒ damaged by worms, ☒ rats, ☒ water /

Beginning, colophon, post-colophon :

B. गुरुमण्डल
ॐ तमो रत्नत्रयाय ॥ ॐ गुरुभ्यो नमः ३ ॥

(पूरा) complete
P.T.O

तुतः

१. सिद्धि मुनि
२. स्तुतमपि (अपूर्ण)
३. सदैं सारदा द्वि (नेपाल भाषा)
४. इन्द्रादिदेव
५. बुद्ध धर्म संघ गति दरसन यात्रा रे (नेपाल भाषा)
६. धारणी.



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ गुणानाममं गुणवद्गुणधम्मं गुणसंघं तथैव
 वचं गुणवज्रं धर्मस्यैव तस्मै श्रीगुणानाममं ॥ सर्वं भवति ॥ ॐ वं वज्रं दक्षिणं
 स्वाहा ॥ जय हि ज्ञानमायं नम्रापिना सर्वतथैव स्वापठं रव्यामि शुद्धिदिव्य
 नवात्रिना ॥ ॐ श्रीं सर्वं तथैव गतं अतिषकं समभीयहं ॥ नमो लोकाय ॥
 ॐ श्रीं स्वाहा ॥ सीलसहाय ॥ ॐ कायविभ्रमधने स्वाहा ॥ पूजा लथिय ॥
 ॐ नमो भगवते पूष्यकं तु राज्ञा यनतथा गताया इहैकं संन्यक्तं सर्वं

धायनं यथा ॥ ॐ पूष्य पूष्य महापूष्य शुपूष्य पूष्य समूकं पू
 ष्यावकिं त्रिं स्वाहा ॥ ॥ पूजा लं अनियाय ॥ ॥ स्वा नं कथं
 कपान् गायिका आसनयाय ॥ ॐ श्रीं निषुवज्ज आसनं हं ॥ ॐ
 ॐ खजतिनं ॥ ॐ सर्वं पापं न पनयहं ॥ वससनय ॥ ॐ मनिषशीव
 जीशी महापुनिसत्रं त्रैकै मां हं हं हं स्वाहा ॥ सिद्धलमं
 शुलसं लयास्यं धर्मनं नित्य ॥ ॐ वज्रं गंधं स्वाहा ॥ ॐ वज्रं निलक

हरवन स्वाहा ॥ मधुलसलंघनस्तानया क ॥ ॐ नमो दे
कं हं वज्रगममय हं वज्र । हूमिभुलेखिसर्वतथागतभुवर्ग
जत्रधमप्रहं ॥ माकिः स्तानलंखनस्य मधुलसहायक ॥
दानं गममयमंम् नो यो महिम् मि

नाचसहिगंभीलं वसमार्जनं कानि ह्रुडं विविठिका नयनयं विर्यक्रिया रु
पनं धानकनं मं कविरुके वक्ष्यं प्रसासं वखा कलायताया वमिना पठव वरु
कं रुत्वा मनिमधुलं रुवठुकनकवर्धुं सर्वलागे विमक ४ सूत्रमनूज विमि
अन्वदीपिका निरधनकनकसमृद्धं जायव वाजवं सं सगत वरगृह मि
नकायक मोन रुत्वा गडूं सूत्रवख सर्वतथागत भू धिष्ठाना धिष्ठुत्वा साधु वडा
क विमवखासा ॥ वासात भसांत याज कानि ॥ ॐ वज्रसल्य सर्व विप्रानूठव

१० ॐ वज्रसल्य २

जगत्
सर्वक

ॐ ॥ खानकाया अमरुचसउयकव विनायक ॥ ॥ हसदास धामवयः
नमः ॥ ॐ श्री सख्यमव नमः ॥ ॐ संस्कृतमख्यमव नमः ॥ दधः ॥ ॐ यं पूर्व
विददाय नमः ॥ हजान ॥ ॐ वं ऊर्ध्वद्वियाय नमः ॥ खडास ॥ ॐ लघुयव नमः ॥
जावलियाय नमः ॥ थजान ॥ ॐ वं उरुवकव नमः ॥ ऊडास ॥ ॐ या उयद्विया
य नमः ॥ खडाकाधस ॥ ॐ वा उयद्वियाय नमः ॥ खडाथथकाधस ॥ ॐ ला उयद्वि
याय नमः ॥ ऊडाथथकानस ॥ ॐ वा उयद्वियाय नमः ॥ ऊडाकाथकनस ॥ ॐ

यः गजवलाय नमः ॥ ऊडास ॥ ॐ वं पदखवलाय नमः ॥ खडास ॥ ॐ लघु
मावलाय नमः ॥ थजान ॥ ॐ वं मित्रवलाय नमः ॥ ऊडास ॥ ॐ या खमवलाय
नमः ॥ खडाकनस ॥ ॐ वीमक्षिवलाय नमः ॥ खडाथथकनस ॥ ॐ वा वक्र
लाय नमः ॥ ऊडाथथकनस ॥ ॐ वा सर्वनिधानलाय नमः ॥ ऊडाकाथक ॥
ॐ वं वज्राय नमः ॥ हजान ॥ ॐ सूर्याय नमः ॥ थजान ॥ ॐ आशुवीवज्राय
नमः ॥ दधः ॥ ॥ वायल्लयलावपूजा ॥ ॐ वज्रपूषाहा ॥ ॐ वज्र

गच्छस्वादा इदं वज्रयस्वादा इदं वज्रदियस्वादा इदं वज्रनेवदस्वादा इदं वज्रला
 जायस्वादा। **जाकिलखकायामुल्लसयक॥** वज्रवत्तमयं भवमष्टम। गाय
 त्माहितं नानावत्तममाकिरुं ददनरुवज्रायनि। गुनूयावृद्धधर्मस्थश्चसद्य
 यश्चकथेवचनित्यामिहावनसंपूर्यवत्तममुवं॥ **॥** उं आं हं गीम हं
 ऊम वृत्तु वृत्तवृत्तवृत्तकमलायमम्यहानावरासनक वायनमहं २ नमस्त
 उं नमानमहं **॥** हं हं हं नमस्यामि गुनूनाथपुमिदम॥ **॥** यस्य पुदकि

नेरुवमात्सकत्ववत्तपरायपिकवयदतांधकालायस्युताविहलोसवि
 लासमत्येकस्मै नमस्कृतिवियंगुवृत्तास्तलायनमाहं २॥ **॥** उं नमावृद्धा
 यगुवृत्तनमधर्मायनावननमासंधायमरुमरुत्थायिमककं नमंसर्ववृद्ध
 नमस्यामि धर्मावजिनतापिकंसंधवसिवसंयनेवत्तुयं नमस्सुमवत्तययं
 मसवद्यैपिकिदिमासद्य अ नमादजगत्पुष्पं वृद्धवोद्धोदरधमनः आवा
 खीमवद्यं जावृद्धधर्मागच्छावमरुवो धिविरुक्तामस्वसाय नार्थयसीप

सर्व २ मि१

इय ॥ इत्यादयामियवमंवव वाधिविरुं निमरुया अहमर्वसत्वान ॥ १ ॥
 अविथ वववाधिविका वडाववयं डगाताहितायं दभनांसर्वयापानां य
 र्थानां वान्मादनां कृत्व पुवा संवा विद्या मिजाया नां नवया वधं मया वा वन
 मरुन यत्कि किं त्या यमा र्जिनं पुकृत्या वयसा वय यरु स्या वय मव वरान
 दह्य र्यं दभया म्य वना था ना मगुनः मि. ॥ १ ॥ कृता ॥ विदूः स्वती तं पुनिय
 स्य पुन पुन ॥ अत्ययं मत्ययं त्वन पुनि गृह्णु नायकाः नरुडकं मिदं नाथ

॥ विसृष्टं वज्रिनिर्मितं ॥
 ॥ विसृष्टं वज्रिनिर्मितं ॥

नकर्तुं च पुनर्मया ॥ यथा नरु थागता आर्या अर्हन्तः सम्यक् वदन् स्तान नव
 दवक्क पाजान निपन्थ निरुत्तमलम्वं ऊ कृति किय नि कायं या दभं य स्वता
 वं यल्लुक्कं यया धर्मतया संनि य नरु था ममानन समान कालं लोकस्य दुः
 खक सुखादय ॥ १ ॥ दुर्लभं कर्तुं सदा दुर्लभं कि सुमय का संयथे वता नाद
 ॥ १ ॥ नान्मृतिमागता वापृथक् ताया गमपास का वा सर्वप्र का वं ऊ गताः
 दिताय कुर्यान्मि ऊ वं सुख संदिताय ॥ ॥ १ ॥ ॥ वलिसलं रय नया ॥

॥ विसृष्टं वज्रिनिर्मितं ॥
 ॥ विसृष्टं वज्रिनिर्मितं ॥

अथापि विवाहनाशियश्च वरुणानरुताधियतिश्च दवाउर्ध्ववडाकः
 पितामहश्च दवासमस्तु वयश्च नागधवाधवागुष्मगर्भेऽसमताऽपुः
 तिश्च कनिवदयश्च स्वकस्वकारश्च वदिगमस्तु गङ्गाकुक्षीतगङ्गा
 :समस्तु सपुत्रमिहः स्वजनसमताः शृष्यं वविपुष्यं नवदमं कु
 उक्तु जिष्टं पिबुवदं दुदं वकर्मास्तु लंङ्गं दुः॥
 मानत्रययायवयुवजपानयवजमहाकाद्यायमहादद्यात्कटका

[illegible]

यैवकुमयुलंम ॥ ८० ॥ सर्वेनपांयाधुवानाकल्यानांमनंलंरुव
कुसर्वदाकालंरुसं ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ १५३ नमायद्याय ॥ सिधिमनिषेन
पादपंकजधामधामुपिचिनकांरुयाधिसुखमहासुखयदयलनमामिहं ॥
॥ धर्मधामुधामनमोइकाइगिनइधुविनाशनं ॥ साधकमनिषेनजागतसुयंर
चयपकासिमां ॥ १ ॥ गुरुनयद्रुगंरुदगुगियनामयद्रुगिगिलिगयांरुनंर
वदकुनलमहंरुगिगिगयद्रुगिगिगविषुना ॥ २ ॥ विषयनयिनिद्रुमहाय
सुलविमनमयसगंदिनंरुमालिनिकनसुगंदकज्ञासुमिधकसमसांरुमी

३ ॥ संपादयमानससमसुगलतमयद्रुगिगिगिगंरुसिगन्यद्रुसलद्रुविग
नालसुयंरुसलनिषांरुमी ॥ ४ ॥ धयलपयद्रुककनयनासुगविजा
गलावनमंरुनरुवगुयगुलसुनिनीनलपिनलकुपद्रुलसंकोपिनं ॥
५ ॥ नानाकसुमवद्रुगिगिगंरुसुनिनयपसुगिगिगंरुनरुसंयनागक
सलपद्रुनालमनाहलं ॥ ६ ॥ नागगधुयंरुक्रुविनलमसुगुसुनिनिक्रुवा

ਸੜ

ॐ वज्रसत्त्वं समग्रमनुपालय वज्रसत्त्वं ननाप्रतिष्ठा इष्टमस्तु
वसुधा धामा भवतु पाषाणवत् कनू न का भवतु सर्वसिद्धिभ
युक्त सर्वकर्मसुविभवितु प्रयत्नं कुरु कुरु कुरु कुरु कुरु
वनं सर्वगतं गगनवज्रमासं मंचवति सर्वमहासमग्रसत्त्वं
ॐ ॥ ३ ॥ नमो रोगघ्नं अयं नमो रोगघ्नं अयं नमो रोगघ्नं अयं
नमो रोगघ्नं अयं नमो रोगघ्नं अयं नमो रोगघ्नं अयं नमो रोगघ्नं अयं

मिगयने अयममि मायय न इह अंमा नायायि न उ । सुखं अल वलियेन
सुखधर्मा गतं गगनं समगनं सुखायै यिसुखमाहानयययि याने सुखे
सुखराव न धम ॥ अं न मा मरु ज्ञेय स्यात् ॥ अं न मा भव ग्रीय स्यात् ॥ अं न मा
सम धीय स्यात् ॥ अं न मा सर्वं तच्छगत् काय वाक् चैव पृथगप
रमाया सुमान निजो न या मि न मा सर्वं तच्छगत् काय वाक् चैव तज्ज
न न न स्यात् ॥ अं न मा सर्वं तच्छगत् काय वाक् चैव तज्ज

काय न के सुकेतु विरचन विरचन निज नाश न देत समस्त
 देवता सुख न गगन न हिल ॥ द. भवन ॥ १ ॥ अस्तु
 योग न देत सुख सकल जहान धर्म न दैत साधि कर्म दसाधि नमन न
 आना जे न्यानि सीय सु ॥ द. भवन ॥ ३ ॥ ४ दय मिनि न न ह्वा वि नम
 के न नाम नि मि न मि क ल ह का च न को दु ग न न वि न दे म द न ह ॥

सर्वथीसयिसुधा ॥ दधवला ॥ ४ ॥ दिनदलस नयाद्भिनयलीस
सीका रुं नं अलकया सर्वय दामनिकु विग नमदनाग भवथा ॥
यिभु श्री ॥ दधवना ॥ ५ ॥ यवतलरुतयतु रुषादसादा च असादयान
यमकनायासामविदुषु असा रुमलकमलयानि सायिवक्त्रायिभु श्रीः
॥ दधवना ॥ ६ ॥ हिमगिनि सिम्बना हसदं रुक्षाय विस्मिन्निबयजन

हनदका वाद्युवर्मनयिसुहगिनि अयुता सायिसुता निरुनि ॥ दध
वल ॥ ७ ॥ क्षानिककनिसया धि इतया दान अना सुनय निरुयिसंथा
दिलम मध्ययि र्वाज निरुनि सिपमृक्ष कामय का विमरुना ॥ दधवना
॥ ८ ॥ कूर्वलय दान निरुयु निकायना दे सुन गियव नरु ना विम
क्रिनि मृयि रुनिनयि रिन सुका गं रुवा सुनका ॥ दधवना ॥ ९ ॥

ज्ञाजितज्ञनकनाथात्रकनामात्रनाक्षायसूयनिर्जयिकानेसंगलगक
दक्षसमलसहातिनाएसायिसूयसूनासादसवगा॥ १० ॥ हिमस
सिकूमदाहमध्यमानात्रनाक्षदधकचिनहृतांरमलायुनेसागिरु
सावलंठुंरुदितसोत्रअगिक०ग॥दभवल॥ ११ ॥ गङ्गामूखद
सतिकसर्वथाविनर्ककाश्विगनमदवात्रिसयक्षयिकगवुक्षगनय



तिनयिसूयवात्रनियनमक्ष॥दभवन॥ १२ ॥ जगन्मिकूसुमनिगाङ्ग
साकिकेसोयनअनविनअयसासमुखाकावहृदागिनयनननयानिस
यिष्ठुकाकुमाला॥दभवल॥ १३ ॥ जसुनवसुनहिनानिखकागान
गाकावहृविविधविधानायनवर्द्धदहृउरयगनिनिहिनामविना
ग्रायिसूय॥द०॥ १४ ॥ निषययिहमहाभावसविद्यागिगायाकुन

51
कनरुदितिश्यायासयानिकअगमयिअतिअगनसर्तांकुमाहितांकुयिस्
क्रादभ॥ ११ ॥ कर्मलूनकुचनयकहिगिंधागिंधादिविहवि
गयनवालाकयानागधनयिअतिअगनसर्तांकुमिधिनीनयिस्फा
॥ दभर॥ १७ ॥ कवकुलधिचिमलमासुकाजाहनीयिमनिकयिल्ल
नाशारुमीनमाद्यविंदासमभुवहलहिनावागिसीनयिस्फा॥ दभ

50
५१ ॥ अथाननिदनयननमसुयिस्फातृक्षयिसानसयनविष
यायधनकाभिसुल्लहलूनयानिअहमानकायगियभनननअनन
भाउगसे॥ १८ ॥ तिथ्यक्रमकनसतानियिअनुगसेनिनिदरुति
नसगाक्यानभाउगसेगद्यमनिकयिसनजयिस्फातृक्षयन
गुननिगुनसागनसे॥ १९ ॥ सुपुलननविकसिअनमिदुचः

[illegible]

निन्दियं नित्यं सुकृतं न समयाजि न इव न मया न न सुनका विनयं पत्य
द्वस्तु निन्दितं विना दभवे न स द्यो पुन मायु या ॥ २३ ॥ ॐ नि श्चयं
मस्तु स वृद्ध एका गक स्य दभवे न त उ कु न समाय ॥ २४ ॥ ॐ
२३ न मा य धाय ॥ म ध्या जंत विदु य सि धि वे ला य न हि न उ न ॥ ॥ ॥
मा स न्ना यंत म्य त न क

॥ न सा जदा ॥ ३ ॥ जया निज संसृति च न क जा ष्ठ श्रुति वा नि न भा द ज स व
 लि न पि च स्वा च ॥ नि सा त ज य न वि दू ज न स थि मि ॥ न सा जदा ॥ ४ ॥ सं सा
 ज सा ज द य ना न व स य सं नाः द वा न जा ष्ठ य स जा धि क किं न जा नां ॥ य का स
 भी य थ म वा च न सि ङ्गि य नां ॥ न सा जदा ॥ ५ ॥ क य म य म य त्रि य जि
 न नं वा जा दीः य य स वा ज्जु न व द न य किं ना नि ॥ नि य य मं स सि ज सा न व

म क ला व ॥ न सा जदा सक ॥ ७ ॥ सं य ष्ठ का ष्ठ न व क य सा जदा स या ता म
 धु मि द सा ज य य किं ना नि ॥ म वा दि वा क स्य न किं वि न न स व य नां ॥ न सा जदा
 ॥ ८ ॥ य दू क य म न व रु दि न स म जा क र वा थ सा ध क न ना स ग नी त म व
 त्वं ह्य न ग म्प र व द र वी व ना स का जि ॥ न सा जदा सक ज सि ङ्गि स द न सा म
 ॥ ९ ॥ नि सा जदा सक ष्ठ सा न स सा य ॥ ४४ ॥

म मि मा ना मा ॥ अ क र ना म ना

म मि मा

5

10

१ गगनो चालेः॥ इध धर्म धर्म गति द ज सन पायनः॥ ह म धर्म इ म ल न मि
 वा ह न अ वे अ ध न म मि ग धि न्यो अ म यार पा हि माल यो ड न ने॥ इ ध
 १॥ ह ए र व इ अ ल स ग ड वा ह न अ अ डी य म मि ग धि न्यो अ म यो
 ड न अ का स पा ड न अ॥ इ ध॥ २० द धि न इ अ ल सः ड न अ वा ह नः अ न न
 स ए व न मि ग धि न्यो अ स पा ड न अ व नु मा ड न ग॥ इ ध म ३॥ य र धि
 म इ अ ल स म र न वा ह न अ अ मि ना ए व म मि ग धि न्यो अ म स

5

यार पः दिं तु लि या ड नु अ॥ इ धा॥ ४॥ ड न न इ अ ल स ग र द वा
 हि न ए अ म धा सि दि ग धि न्यो अ स पा ड न व लि षा धा न य ड
 न र॥ इ धा॥ ५॥ का क म अ ना धा ए र य प र का स म लः अ म
 यो य लो क स न क र न ग पा शः इ ध धर्म सं ध ग ति द ज स न यो
 य न